परिशिष्ट-४ प्रकृति (part 1)

१. बारह महीनों में बहनेवाली विभिन्न हवाएँ तथा खेती-बाग पर उनका प्रभाव

हवाओं का नाम	प्रभाव	
	प्रतिकूल	**अनुकूल**
चैत		
पुरवाई (धरती पर लेटती हुई चले)	आम का लस पत्तियों पर बह जाता है, जिससे वह गर्भ धारण नहीं कर पाता। आम लसिया जाता है।	लौका अधिक उपजती है। महुआ के लिए भी अच्छा है।
आँधी	आम झड़ते हैं।	
पछइयाँ	करेला में गिड़ार (कीड़ा) पड़ जाती है, वे काने हो जाते हैं, लौका कम उपजती है।	गेहूँ-जौ आदि पकने के लिए आवश्यक। खरबूज- तरबूज तथा मिर्च की पैदावार बढ़ जाती है।
वैशाख		
पुरवाई	पुरवाई में अनाज बरसाने से कीड़ा लग जाता है।	
आँधी	भुस उड़ जाता है	
पछइयाँ	अनाज बरसाने से कीड़ा नहीं लगेगा	
ज्येष्ठ		

© इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र पहला संस्करणः १९९७

All rights reserved. No part of this book may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

झाँक-लू (तेज-गरम हवा)		फालसा खरबूज-तरबूज में मिठास आता है।
भभूरा (धूल के साथ चक्कर काटनेवाली तेज हवा) आँधी	बेल पलट जाती है, फल कम लगते हैं (बारी में)	
पुरवाई	फूल पत्तों में कमी	
पछइयाँ		अनुकूल है (बारी)
आषाढ़		
अर्रबाउ (आँधी के साथ मेह)		
सावन		
सावनी-पुरवाई	खेती के लिए आधि-व्याधि मानी जाती है। मक्का में हानि	सावन मास चलै पुरवइया बद्ध बेच के लैलेउ गइया
बहरा (जो से चलनेवाली हवा) (लगातार आठ दिन चले तो)	ज्वार-बाजरा-मक्का-कपास के पौधों का बिछौना बिछ जाता है।	
पछइयाँ (दो चार दिन चलने से सूअरा वायव्य)		खेती के लिए लाभ अनुकूल
भादों		
भदइयाँ-पछइयाँ	आधि-व्याधि	सावन पुरवाई बहे भादों में पछवाय। कंत डंगरन बेच कें लरका लेउ जिवाय।
बहरा		
पुरवाई		खेती के लिए लाभ
क्वार		
ईसान		खेती के लिए लाभ
पछइयाँ		खेती के लिए लाभ सावन में सुअरा चलै भादों में पुरवाय। क्वार पछइयाँ जो चलै कातिक साख सवाय। सावन पछिया भादों पुरवा क्वार चलै ईसान। कातिक कन्था कुठला भर गए ऊलै फिरै किसान।

© इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र पहला संस्करणः १९९७

All rights reserved. No part of this book may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

कार्तिक अगहन पौष		
चौवाई (लपेटा मारकर, दिशा दबलकर चलनेवाली तेज हवा)		
पछइयाँ	जौ-गेहूँ में दाना पड़ते समय पछइयाँ जोस से चले तो बहरा रोग लग जाता है।	
पुरवा	सरसों में माँऊँ नाम का कीड़ा लग जाता है।	
माघ		

चौवाई	जौ-गेहूँ का दाना पिच्ची हो जाता है।	
पुरवा	सरसों में माँऊँ कीड़ा	चलै माह में जो पुरवाई तौ सरसों ऐ माँऊँ खाई।
हड़कंप (कँपा देनेवाली हवा)		
फाल्गुन		
फगुनेंटा		
आम झूरनी	पत्तियाँ झड़ जाती हैं।	
अहर (आँधी ओले)	आम की फसल मारी जाता है।	
पुरवा	दाना पड़ते समय गेहूँ में गिरुई कीड़े की आशंका	गेहूँ-जौ आदि का दाना मोटा होगा और अधिक होगा।
पछइयाँ	मटर, चने में हानि।	

२. वायु-वर्षा योग

वर्षा एवं विभिन्न हवाओं का संबंध

हवाओं का नाम	वर्षा का स्वरूप	कहावत
पुरवा	पुरवा हवा बादल लाती है।पूर्वा नक्षत्र में पुरवाई हवा चले तो अधिक वर्षा का योग माना जाता है।	भुइयाँ लोट चलै पुरवाई तौ जानों बरसा रित आई

© इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र पहला संस्करणः १९९७

All rights reserved. No part of this book may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

	सावन में पहली पुरवाई खेती के लिए अच्छी है।	पुरवाई सीरि चलै विधवा पान चबाय यह लै आवै मेहकूँ वह काहू कर जाय!
	यदि ठंडी-ठंडी पुरवा चले तोवर्षा अवश्य होगी।	पुरवाई बादर करै पछवा करै उधार
पछइयाँ	पछइयाँ हवा से आकाश में छाए हुए बादल हट जाते हैं। यदि पछइयाँ प्रतिकूल पड़ जाए, निरंतर चलती रहे तो वर्षा की प्रतीक्षा मत करो। पुरवा हवा थोड़ा-थोड़ा पानी बरसाती हे परंतु पछइयाँ घनघोर वर्षा करती है।	जो पर जाय पछइयाँ बैंडौ देखौ मती मेह कौ पैंडौ पुरवाई लावै थोर-थोर। पछइयाँ बरसै घोर-घोर।
उत्तरा	यदि उत्तरा हवा चले तो वर्षा के कारण इतना धान होगा कि कुत्ते भी माँड नहीं पी सकेंगे कि वह फिका-फिका पड़ा रहेगा।	ब्यार चलैगी उत्तरा माँड न खांगे कुत्तरा।
सूअरा (वायव्य)	खूब वर्षा	
दक्षिणी	दक्षिणी हवा को कुलक्षिणी माना गया है पर माह-पूस में चलने वाली दक्षिणी हवा पानी लानेवाली होती है।	दक्खिनी कुलक्खिनी, माह-पूस सुलक्खिनी। जौ हरहुंगे बरसन हार, कहा करैगी दक्खिन ब्यार।
जमराजी (आग्नेय)	अकाल का योग	जमराजी जो चलै समीरा। पड़ै काल दुख सहै सरीरा।
हाड़ा या हड़होरा (नैऋत्य	अतिसूखा या अतिवर्षा	कै हड़होरा हाड़ बिखेरै, कै घोंटुन तक पानी फेरै।

© इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र पहला संस्करणः १९९७

All rights reserved. No part of this book may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

ईशान	गर्मी बहुत वर्षा यदि ईशान हवा चले तो किसानों को ऊँचे धरातलवाले खेतों पर बीज बोना चाहिए, नीचे धरातलवाले खेत वर्षा के कारण गल जाएँगे।	जो कहूँ ब्यार चलै ईसान, ऊँचे पूठा बऔ किसान।

३. वायु मास योग और वर्षा

(विभिन्न महीनों में बहनेवाली वायु का वर्षा से संबंध)

महीना और वायु	**वर्षा का योग**	**लोकोक्ति**
चैत में पछवा चले	तो भादों में वर्षा का योग	
ज्येष्ठ में जितने दिन पुरवा चले	सावन में उतने ही दिन सूखा रहेगा।	जै दिन जेठ चलै पुरबाई, दै दिन सावन सूखौ जाई।
सावन में पहली पुरवा	अच्छी वर्षा	पहला पवन पूरब से आबै, बरसै मेघ अन्न झरि लाबै।
सामान्यतया पुरवा	वर्षा कम	
भादों जितने दिन पछवा चले	माघ में उतने दिन पाला पड़े	जै दिन भादों पछिया ब्यार। तै दिन माह में परै तुखार।
पुरवा न चले तो	खेती पतली पड़ जाय	
पौष-माघ दक्षिण हवा चले तो	सावन-भादों में अनुकूल वर्षा का योग	माघ पूस जो दखिना चले। तौ सावन के लच्छन भले।

४. तिथि वायु युति

पौष-अमावस को मूल नक्षत्रहो और चौबाई हवा चले तो	सवाई वर्षा होगी	कुइया मावस मूल की और चलै चौवाय, ओंद बाँधियो छानि कें बरखा होय सवाय।
माघ शुक्ल पंचमी को उत्तरा चले तो	भादों में वर्षा का योग नहीं।	माह उजेरी पंचमी चलै उत्तरा बाय। घाघ कहै सुन घाघनी भादों कोरी जाय।

५. बादलों का रंग और दिशा : लक्षण

© इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र पहला संस्करणः १९९७

All rights reserved. No part of this book may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

बादलों का रंग

बादल का रंग	वर्षा का अनुमान	लोकोक्ति
तीतर पक्षी जैसी साँवले रंग का बादल	अवश्य बरसता है	तीतर बन्नी बादरी विधवा काजर रेख। वह बरसै वौ घर करै यामें मीन न मेख।
काला बादल	डरानेवाला होता है	कारी घटा डरावनी सेत भरैगी खेत
भूरा बादल	खेत भरनेवाल होता है	
पीला बादल	फीकी वर्षा का लक्षण	बादर भए पीरे मेह परिंगे धीरे
लाल बादल	तुरंत वर्षा	सब बादर है गए ला, मेह परेंगे हाल
माघ में लाल बादल	ओले बरसेंगे	

६. दिशा मेघ युति

दिशा-बादल	प्रभाव	लोकोक्ति
पश्चिम दिशा से पछवा हवा के साथ उठा बादल	बरसेगा नहीं	पछाँयौ बादर, लबार कौ आदर
पुरवा के चलते पश्चिम से उठा बादल	वर्षा अवश्य होगी	उलटौ धुरवा जो चढ़ै राँड मूँड ते न्हाय घाघ कहै सुन घाघनी वौ बरसै वौ जाय।
ईशान कोण का बादल	वर्षा अधिक	
उत्तर दिशा का बादल यदि गर्जना करे	खेत भर देगा	उत्तर घन गरजै नहीं, गरजै तौ भरियाँ। धीर पुरुष बोलै नहीं, बोलै तो करियाँ।
पश्चिम सूर्य हो तब पूरब से उठा बादल	शीघ्र बरसेगा	पूरब बादर पछाँह भान घाघ कहै बरसा नियरान।
पूरब से पश्चिम दिशा को जानेवाला बादल	बरसेगा	पतर पवंती ल्होल पइ बदर पछाहें जाय। उतते आइकें बरसि हें जल जंगल कर जाय

७. तिथि मेघ युति

© इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र पहला संस्करणः १९९७

All rights reserved. No part of this book may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

तिथि	वर्षा योग	प्रभाव
चैत्र दशमी	वर्षा न हो तो	चौमासों में वर्षा होगी चैत मास दसमी खड़ा जो कहुँ कोरा जाय चौमासे भर बादला भली भाँति बरसाय
वैशाख शुक्ल प्रतिपदा	बादल हों, बिजली चमके	अनाज खूब पैदा होगा
ज्येष्ठ कृष्ण पंचमी	आधी रात बादल गरजे	सूखा पड़ेगा लगत जेठ की पंचमी गरजै आधी रात। तुम जइयो प्रिय मालवा हम जांगे गुजरात।
आषाढ़ कृ. प्रतिपदा	उत्तर में बादल गरजे	अकाल पड़ेगा परबा लगत असाढ़री जौ उत्तर गरजंत। पंडित जन ऐसे कहें बदि के काल पडंत।
कृ. अष्टमी	बादलों के बिना चंदा स्वच्छ दीखे	सूखा पड़ेगा धुर असाढ़ की अट्ठमी चंदा निरमल दिख। कंथ जाय कें मालवे माँगत फिर हौ भीख।
पूर्णिमा चंद तौ भडरी जोसी कहें होवै	चंद्रमा को बादल घेर लें	वर्षा अनुकूल हो, आनन्द होगा असाढ़ मास पूनौ दिवस बादल घेरे तौ भडरी जोसी कहें होवै परम आनंद
सावन कृष्ण प्रतिपदा	प्रातःकाल सूर्य बादलों से ढका हो तो	चार महीने तक पानी बरसेगा। सावन परवा आँधरी उगत न दीखै भान। चार मास पानी परै जाकौ है परमान।
कृष्ण चौथ	वर्षा हो तो मानो सोना बरस रहा है	खेती अच्छी होगी सावन पहली चौथ कूँ जौ मेघा बरसाहिं। कंत जानयो सौ बिसें सोनों भरि भरि लाहिं
सावन शुक्ल पंचमी	उगते सूर्य के दर्शन न हों	देवठान एकादशी (कार्तिक) तक वर्षा होगी सावन उतरत पंचमी जौ ढकि ऊगै भान

© इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र पहला संस्करणः १९९७

All rights reserved. No part of this book may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

		बरसा तब तक होयगी जब तक देवउठान
सावन शुक्ल सप्तमी	आधी रात मेघ गरजें चंद्रमा चाँदनी के साथ खिले तो वर्षा का अभाव है	सूखा पड़े सावन पिछली सप्तमी गरजौ आधी रात। तुम जइयौ पिय मालवे हम जांगे गुजरात। सावन उतरत सप्तमी जौ ससि निरमल जाय। कै जल दीखै कूप में कै कामिनि कलस भरै।
कार्तिक शुक्ल एकादशी	बादल-बिजली हो बादल हों	आषाढ़ में अच्छी वर्षा होगी कातिक उजरि एकादशी बादर बिजुरी होय। सगुनी कहें असाढ़ चोखी होय। आगामी आषाढ़ में अच्छी वर्षा का योग है- उतरत कातिक द्वादशी जो मेघा दरसाहिं । सोई आय असाढ़ में गरजै औ बरसाहिं।
अगहन कृष्ण अष्टमी	बादल-बिजली दीखे	तो सावन में वर्षा होगी, फसल सवाई होगी। आठें लगत अधैन कूँ बादल बिजरी होय। सावन में बरखा घनी साख सवाई होय।
पौष शुक्ल सप्तमी,	बादल गरजें तो	अच्छी खेती होगी, साख सवाई बनेगी- पूस उजेरी सत्तमी आठें नौमी गाज। सम्मत साख भली बनें बनि जाँय बिगरे काज।
माघ कृष्ण सप्तमी	बादल हों, बिजली चमके	आषाढ़ में खूब वर्षा होगी सातें लगते माह की घन बिजुरी दमकंत। चार मास पानी परै सोच करौ मत कंत।
शुक्ल सप्तमी	आसमान में बादल हों	आषाढ़ में खूब वर्षा होगी। माघ सप्तमी ऊजरी बादर मेघ करंत।

© इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र पहला संस्करणः १९९७

All rights reserved. No part of this book may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

		तौ आसाढ़ में भड्डरी घनौं मेह बरसंत।

८. वर्षा मास योग

(विभिन्न महीनों में होनेवाली वर्षा का प्रभाव)

वर्षा का महीना	प्रभाव	कहावत
चैत में वर्षा की एक बूँद पड़े तो	समझना चाहिए कि सावन की एक हजार बूँद कम हो गई	एक बूँद जो चैत में परै, सहस बूँद सावन की हरै।
आषाढ़ (शुक्ल पक्ष) की वर्षा	खेती के लिए अत्यंत आवश्यक	आधे असाढ़ तौ बैरी की ऊ बरसै।
सावन में वर्षा न हो तो	खरीफ की फसल नष्ट हो जायेगी।	
भादों में वर्षा न होत तो	रबी की फसल पर भी उसका दुष्प्रभाव पड़ेगा	बिना भादों के बरस बिना माइ के परसे
क्वार की वर्षा	लाभप्रद है	
कार्तिक की वषा	हानिकारक	
अगहन (कृष्ण पक्ष)	खेती फले	अगहन में सरवा भर, फिर करवा भर, अधैन महौट राम की जौ मिल जाय पहले पाख।
शुक्ल पक्ष की वर्षा	हानि	अघैन बरसै बूढ़ी ब्याइ, ऐसौ देस रसातल जाय
पौष : वर्षा		पानी बरसै आधे पूस, आधे गेहूँ आधे भुस
माघ : वर्षा		
फागुन : वर्षा		फागुन कौ मेह बैरी को सनेह।

९. तपन वर्षा योग

नक्षत्र	तपा-वर्षा योग	लोकोक्ति
ज्येष्ठ मास : शुक्ल पक्ष आर्द्रा पुनर्वसु	के इन दस नक्षत्रों में निरंतर कड़ी धूप और गर्मी पड़े तथा लू चले तो चौमासों में अच्छी वर्षा होगी तथा यदि उन नक्षत्रों में वर्षा हो जाय, तो चौमासों में सूखा पड़ेगा	जेठ उजारे पाख में अद्रा संग दस रिच्छ। बरसें तो सूखा परै तपै तो संमत अच्छ

© इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र पहला संस्करणः १९९७

All rights reserved. No part of this book may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

पुष्य आश्लेषा		तपा जेठ में जो तुइ जाय तौ बरसा हेटी पर जाय
मघा पूर्वा उत्तरा हस्त		

© इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र पहला संस्करणः १९९७

All rights reserved. No part of this book may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.